Vol.11 April'18 No.9
Annual Subscription Rs 100
Rs. 10/- per copy

ब्रह्मार्पण

BRAHMARPAN

वेदोऽखिलो
धर्ममूलम्

A Monthly publication of
Brahmasha India Vedic
Research Foundation

Brahmasha India Vedic Research Foundation

ब्रह्माशा इंडिया वैदिक रिसर्च फाउन्डेशन

चिन्तन

–विश्वनाथ

महाभारत है
जीवन मूल्यों के कठिन संघर्ष
की महागाथा
जिसकी परिणति थी
भयंकर विनाशकारी युद्ध
असंख्य हताहत
दोनों पक्ष आहत
किसकी विजय, कौन परास्त

पटाक्षेप होता है महाभारत का
पांडवों के महाप्रयाण से
चारों ओर बर्फ ही बर्फ, दुर्गम चढ़ाई
एक एक कदम रखना कठिन
थककर चूर हुई द्रोपदी सबसे पहले गिरी
पाँचों पांडवों में से किसी ने भी
उसकी ओर मुड़कर भी नहीं देखा
चलते ही रहे फिर गिरे नकुल सहदेव
फिर अर्जुन फिर भीम
एक-एक करके चारों भाई
धर्मराज युधिष्ठिर ने
मुड़कर भी नहीं देखा
कौन गिरा, कब पीछे छूट गया
चलते ही रहे
हिमालय में स्वयं भी
समाहित हो जाने के लिए

गीता में श्रीकृष्ण ने ठीक ही
कहा है
'गतासून्, अगतासून् च
नाऽनुशोचन्ति पण्डिताः'
जो पीछे छूट गये
उनका शोक कैसा?
विज्ञजन उनका शोक नहीं करते

यही है जीवन का शाश्वत सत्य
जीवन की निर्मम परिणति
यही है महाभारत का यथार्थ

ब्रह्मार्पण परिवार के सदस्यों को चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, विक्रमी संवत् 2075 (तदनुसार-18 मार्च 2018) को भारतीय नववर्ष एवं आर्यसमाज स्थापना दिवस के शुभअवसर पर हार्दिक शुभकामनाएँ

BRAHMASHA INDIA VEDIC RESEARCH FOUNDATION

C2A/58, Janakpuri,
New Delhi-110058
Tel :- 25525128, 9313749812
email:deeukhal@yahoo.co.uk
brahmasha@gmail.com
Website : www.thearyasamaj.org
of Delhi Arya Pratinidhi Sabha

Sh. B.D. Ukhul
Secretary
Dr. B.B. Vidyalankar 0124-4948597
President
Col.(Dr.) Dalmir Singh (Retd.)
V.President
Dr. Mahendra Gupta *V.President*
Ms. Deepti Malhotra
Treasurer

Editorial Board
Dr. Bharat Bhushan Vidyalankar,
Editor
Dr. Harish Chandra
Dr. Mahendra Gupta
Sh. Shiv Kumar Madan

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्याय क्षेत्र दिल्ली ही होगा।

Printed & Published by
B.D. Ukhul for Brahmasha India Vedic Research Foundation
Under D.C.P.
License No. F2 (B-39) Press/ 2007
R.N.I. Reg. No. DELBIL/ 2007/22062
Price : Rs. 10.00 per copy
Annual Subscription : Rs. 100.00

Brahmarpan April'18 Vol. 11 No.9
चैत्र-बैशाख 2075 वि.संवत्

ब्रह्मार्पण
BRAHMARPAN

A bilingual Publication of Brahmasha India Vedic Research Foundation

CONTENTS

1. चिन्तन
-विश्वनाथ 2
2. संपादकीय 4
3. सांख्य दर्शन 8
-डॉ. भारत भूषण
4. हिन्दुओं के विनाश की परंपरा
-डॉ. धर्मवीर 9
5. पं. गुरुदत्त की दृष्टि में देवता क्या हैं? 15
-लाला लाजपतराय
6. शहीद खुदीराम बोस ने गीता लेकर चूमा फन्दा 18
-शिवकुमार गोयल
7. भारतीय ऐतिहास से यह खिलवाड़ कब तक 22
-राजेश बरनवाल
8. मेघालय में ईसाइयत और हिन्दी 27
-दयाराम पोद्दार
8. इस्लामी शिक्षा में सुधार बिना आतंकवाद मिटना असंभव 29
-प्रो. जयदेव आर्य
9. Gita And Renunciation 34
-Ashok Vohra

संपादकीय

सरकारी बैंकों में घोटाले
आर्थिक अपराधी भगौड़ों की धरपकड़

आज हम जिस विषय की चर्चा करने जा रहे हैं उसका संबंध पंजाब नैशनल बैंक के घोटाले से है जिसने देश की अर्थव्यवस्था की आधारभूत संरचना को हिलाकर रख दिया है। इस घोटाले के मुख्य पात्र नीरव मोदी, उनकी पत्नी ऐमी, नीरव मोदी के भाई निशाल और उनके मामा मेहुल चोकसी।

पंजाब नैशनल बैंक को 12622 करोड़ का झटका देकर वे जनवरी में देश छोड़कर चले गए। कहा जाता है कि नीरव मोदी के भाई निशाल जो बेल्जियम के नागरिक हैं और उनके मामा मेहुल चोकसी ये सब नीरव मोदी के व्यापारिक पार्टनर भी हैं। ऐसा ज्ञात हुआ कि नीरव ने न्यूयार्क में एक लग्जरी होटल में 75000 रु. रात्रि के किराए पर तीन महीने के लिए एक सूइट बुक करवा लिया है। यह भी खबर है कि नीरव मोदी बेल्जियम में वहाँ के नागरिक अपने भाई विशाल के पास हैं। इसके अतिरिक्त शायद वे स्विट्जरलैंड या दुबई में हो सकते हैं। नीरव मोदी का संबंध बेल्जियम के ऐंटवर्प नगर में हीरे का व्यापार करने वाले परिवार से है। नीरव ने फाइनेंस की पढ़ाई शुरू की थी, जिसमें वे फेल हो गए थे। इसके बाद वे हीरे के व्यापार में उतर पड़े। ये फिर मुंबई में अपने मामा मेहुल चोकसी, जो गीतांजलि जेम्स के चेयरमैन थे, उनके पास आ गए। इन्होंने 1999 में हीरों के व्यापार के लिए फायर स्टार डायमंड नामक कंपनी बना ली। कुछ समय बाद नीरव ने कुछ अन्तरराष्ट्रीय कंपनियों को खरीद लिया। इससे इनका अपना मजबूत नेटवर्क बन गया। इसके बाद इसने कॉन्ट्रैक्ट मैन्युफैक्चरिंग में कदम रखा। इसका व्यापार भारत के अलावा रूस, साउथ

अफ्रीका और आर्मेनिया तक फैला है।

नीरव मोदी केवल हीरों का व्यापारी नहीं

जिस नीरव मोदी के स्टोर का उद्घाटन डोनाल्ड ट्रम्प करें और जिसके बनाए गहने पहन कर केट विंसलेट ऑस्कर समारोह में गई हो और प्रियंका चोपड़ा जिसकी ग्लोबल ऐम्बेसेडर हो ऐसे नीरव मोदी को केवल हीरों का सौदागर नहीं कह सकते। इस दौरान जहाँ नीरव ब्रैंड प्रमोशन में लगा था, वहाँ उसकी पत्नी सोशल सर्कल में छाई हुई थी।

नीरव मोदी, पंजाब नैशनल बैंक को करोड़ों का चूना लगाकर, कहाँ गए, पता नहीं? परन्तु अब भी वह कुछ बैंक अधिकारियों के संपर्क में है। नीरव के विरुद्ध लुक आउट नोटिस जारी किया जा चुका है। नीरव मोदी ने सूचित किया है कि वह छह महीने के अन्दर बैंक की रकम लौटाने को तैयार है। परन्तु वह सौदेबाजी में लगा है। दूसरी ओर कभी वह कहता है बैंक ने मेरे विरुद्ध इतना प्रचार कर दिया है कि मेरे व्यापार की बहुत हानि हुई है अतः मैं बैंक की रकम नहीं लौटा सकता। इस संबंध में केन्द्रीय वित्त मंत्रालय ने पंजाब नैशनल घोटाले पर बैंक से एक सप्ताह में सारे संदिग्ध लेन-देन की रिपोर्ट देने को कहा है। इस घोटाले पर बैंक अधिकारी भी शक के घेरे में हैं। बैंक के अधिकारियों ने हीरा व्यापारी नीरव से जुड़ी फर्मों को साख-पत्र (लेटर ऑफ अंडरटेकिंग) दिए हैं।

साखपत्र के आधार पर कंपनियों ने विदेशों में निजी और सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों से रुपया भुनाया है।

इन्होंने 2011 से काम कर रहे उपमहाप्रबंधक के स्तर के अधिकारियों के साथ साठगाँठ कर बैंक से पैसा निकाला। नीरव मोदी से जुड़ी तीन फर्मों ने बैंक से संपर्क कर बायर्स क्रेडिट की माँग की जिससे वे अपने विदेश के व्यापारियों का

भुगतान कर सकें। इनमें नीरव मोदी, निशाल, ऐमी और मेहुल चोकसी हिस्सेदार थे।

इन फर्मो को बैंक अधिकारियों की मिली–भगत से बायर्स क्रेडिट दिए गए। जब कि उनका क्रेडिट रिकार्ड अच्छा नहीं था। यहाँ से हाँगकाँग के बैंकों की शाखाओं को पैसे का स्थानान्तरण किया गया जो अनुचित था।

पंजाब नेशनल बैंक की ब्रैडहाउस शाखा से 11360 करोड़ का फ्रॉड

देश के दूसरे सबसे बड़े सरकारी बैंक पंजाब नैशनल बैंक ने अपनी मुंबई शाखा में 11,360 करोड़ रुपये की धोखाधड़ी की शिकायत सी.बी.आई. से की जिसके परिणामस्वरूप ब्रैडी हाउस शाखा के डिप्टी मैंनेजर सहित 10 अधिकारियों को निलम्बित कर दिया गया।

बैंक की उक्त शाखा ने स्टॉक एक्सचेंज को बताया कि उनकी शाखा से कुछ धोखाधड़ी वाले अनधिकृत लेन–देन का पता चला है। इसमें कुछ कर्मचारियों की साँठगाँठ से कुछ खाताधारकों को लाभ पहुँचाया गया है। इन खाताधारकों में डायमंड्स आर यूस में नीरव मोदी, उनकी पत्नी ऐमी, निशाल और मेहुल चौकसी हिस्सेदार है। सी.बी.आई. और प्रर्वतन निदेशालय की जाँच के घेरे में चार बड़े जूलंर–गीतांज़लि, गिन्नी, नक्षत्र और नीरव मोदी थे। प्रवर्तन निदेशालय ने इन पर मनीलाँडरिंग का मामला दर्ज किया। इन कंपनियों को यह फंड गलत तरीके से भेजा गया था।

नीरव मोदी के खिलाफ कार्रवाई

पंजाब नैशनल बैंक द्वारा नीरव मोदी व अन्य के पासपोर्ट चार सप्ताह के लिए सस्पेंड कर दिए हैं। एक सप्ताह में उत्तर न आने पर पासपोर्ट रद्द किए जाएँगे। सी.बी.आई. ने FIR दर्ज कर नीरव, उनकी पत्नी ऐमी, भाई निशाल के बारे में

जानकारी माँगी हैं। प्रवर्तन निदेशालय ने 549 करोड का सोना, जूलरी और हीरे जब्त किए हैं। आयकर विभाग ने नीरव मोदी के 105 बैंक खाते और 29 संपत्तियों की कुर्की की और कर चोरी का आरोप लगाया। नीरव ग्रुप के 100 करोड़ के शेयर भी जब्त कर लिए गए। इसके अलावा नौ लक्जरी कारें जब्त कीं जिनकी कीमत 11 करोड़ से अधिक है। सरकार ने चौकसी की 41 संपत्तियाँ जब्त कीं हैं जिनकी कीमत 217 करोड़ है।

बैंक में नीरव मोदी की सहायता करने वालों से ज्ञात हुआ कि प्रत्येक लेटर ऑफ अंडरटेकिंग जारी करने के लिए नीरव और चौकसी की कंपनियाँ रिश्वत के तौर पर कमीशन देती थीं। यहाँ तक कि काम कराने के लिए आरोपियों की ओर से हनीट्रैप के इस्तेमाल की बात भी सामने आई। यह काम नीरव की पत्नी ऐमी द्वारा किया जाता था।

इससे पूर्व भी, माल्या, ललित मोदी, और अब कानपुर की रोटोमैक पेन कंपनी के प्रोमोटर विक्रम कोठारी और कानपुर के ही कपड़ा व्यापारी लक्ष्मी कॉटन्स लिमिटेड बैंकों से धोखाधड़ी के मामलों में लिप्त पाए गए हैं। ये धोखेबाज हजारों करोड़ रुपये उधार लेकर विदेशों में भाग जाते हैं जहाँ इन भगोड़ों को पकड़ना मुश्किल हो जाता है।

अन्ततः वित्त मंत्रालय ने बैंकों को 15 दिनों में बैंकिंग सिस्टम को सुधारने के आदेश दिए हैं। सरकार ने बैंकों को धोखाधड़ी का पता लगाने के लिए सरकारी बैंकों को 50 करोड़ कर्ज वाले खातों की जाँच करने और उसके अनुसार सी.बी.आई. को रिपोर्ट भेजने का निर्देश दिया है।

सांख्य दर्शन (अध्याय-1, सूत्र-122)

-डॉ. भारत भूषण विद्‌यालंकार

अनेक आत्मा मानने पर भी आत्माओं की लगातार मुक्ति होते रहने से संसार का उच्छेद (नाश) हो जाना चाहिए, परन्तु ऐसा होता नहीं है। सूत्रकार अगले सूत्र में इसका समाधान करता है; सूत्र है-

अनादावद्‌य यावदभावाद् भविष्यदप्येवम्।।123।।

अर्थ-(अनादौ) अनादिकाल से (अद्‌ययावत्) आजतक (अभावात्) (उच्छेद) नाश न होने से (भविष्यदपि) भविष्यत् काल में भी (एवम्) इसी उच्छेद न होगा।

भावार्थ-अनादिकाल से आजतक संसार का उच्छेद (नाश) न होने से भविष्यत्‌काल में भी ऐसा प्रकार न होने की संभावना की जा सकती है। आत्मा की अनेकात्मकता के पक्ष में आत्माओं के अनन्त होने के कारण उनका मोक्ष होते रहने पर भी संसार के नाश की संभावना नहीं है क्योंकि सृष्टि का यह क्रम अनादिकाल से अनन्तकाल तक निरन्तर निर्बाधरूप से चलता रहता है।

दी हिबिस्कस,
बिल्डिंग-5, एपार्ट नं.-9बी
सेक्टर-50, गुड़गाँव (हरियाणा) 122009
फोन-0124-4948597

BRAHMASHA INDIA VEDIC RESEARCH FOUNDATION ACKNOWLEDGES WITH THANKS RECEIPT OF THE Following DONATIONS:-

1. Dr. H. L. Sharma, C-2A/16/210, Janakpuri N.D.-58 ₹ 500/-
2. Sh. K.C. Sood, C2B/37C, Janakpuri N.D.-58 ₹ 500/-

Donations to the Foundation are eligible for Tax Exemption under Section 80G of the Income Tax Act 1960 Vide No.DIT(E)1/3313/DELBE 21670-2503210 dated 25.03.2010

हिन्दूओं के विनाश की परंपरा

–डॉ. धर्मवीर

हिन्दू समाज के पास दो विचित्र विशेषतायें हैं। एक इसके पास प्राचीन शास्त्रों का आदर्श चिन्तन और दूसरा मध्यकालीन पाखण्ड और अन्धविश्वास भरा आचरण। हिन्दू समाज बातें शास्त्र व हिन्दू आदर्शों की करता है – हिन्दू जीवन पद्धति है, हिन्दू सह अस्तित्व का सिद्धान्त है, हिन्दू सर्वमंगल का दर्शन है, हिन्दू विविधता उसकी विशेषता है आदि, यह समाज के जीवन की विडम्बना है। अपने अहिंसा के उपदेश में चींटी को मारना पाप समझता है परन्तु नरबलि इसका धर्म है। इस विचित्रता को समझने के लिए हमारे पास एक सटीक सन्दर्भ है–

नोआखली का हत्याकाण्ड–1946 में मुस्लिम लीग ने 'पाकिस्तान प्राप्त करने के लिए' सीधी कार्रवाई के नाम से देश-भर में हिंसात्मक आन्दोलन छेड़ा। सबसे भयंकर हत्याकाण्ड नोआखली (पूर्वी बंगाल) में हुआ। हजारों हिन्दुओं को मौत के घाट उतारा गया, स्त्रियों का सतीत्व लूटा गया और न जाने कितनों को बलात् मुसलमान बनाया गया। डॉ० श्यामाप्रसाद मुखर्जी उस समय अखिल भारत हिन्दू महासभा के प्रधान थे। इस सारी समस्या पर विचार करने के लिए उन्होंने हिन्दू महासभा भवन में एक बैठक बुलाई। सनातनधर्मियों के प्रतिनिधि के रूप में, उसमें स्वामी करपात्रीजी उपस्थित थे, आर्यसमाज की ओर से मैं। डॉ० मुखर्जी ने विशेष रूप से दो प्रश्न प्रस्तुत किये।

1. बलात् मुसलमान बनाये गये हिन्दुओं को कैसे वापस लाया जाए।
2. हिन्दू महासभा के हाथों में शासन की बागडोर कैसे आये?

पहले प्रश्न के उत्तर में स्वामी करपात्रीजी ने कहा कि जो फिर से हिन्दू बनना चाहेगा, उसे एक पाव गौ का गोबर खाना होगा। अपनी बारी में मैंने कहा–जो यह कहे कि मैं हिन्दू हूँ, उसे हिन्दू मान लिया जाए। उसके लिए किसी प्रकार के संस्कार की आवश्यकता नहीं है। डॉ० मुखर्जी ने मेरी बात का समर्थन

करते हुए आपबीती एक अत्यन्त मार्मिक घटना सुनाई। उन्होंने कहा कि जब मैं नोआखली गया तो मुझे एक बुढ़िया मिली। उसने मुझे बताया कि मुझे और मेरी तरह अन्य बहनों को इस प्रकार मुसलमान बनाया कि दो मौलवियों ने पगड़ी का एक-एक छोर पकड़ा और हमें तलवार का भय दिखाकर पगडी को हाथ से पकड़ने का आदेश दिया। डर के मारे हमने पगड़ी अपने हाथों में ले ली। मौलवियों ने कलमा पढ़ा और हमें मुसलमान मान लिया गया। परन्तु जिस समय वे कलमा पढ़ रहे थे, उस समय मैं मन-ही-मन राम-राम कर रही थी। मुझे बताओ, वह बुढ़िया मुसलमान कब हुई जो मैं उसे फिर से हिन्दू बनने के लिए एक पाव गोबर खाने के लिए कहूँ? मैं दीक्षित जी से पूरी तरह सहमत हूँ।

दूसरे प्रश्न के उत्तर में करपात्रीजी ने कहा कि हम अपने धर्म में सरकारी हस्तक्षेप नहीं सहन कर सकते। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि 30-35 करोड़ सनातनधर्मी हिन्दू महासभा को अपना मत देकर जिता सकते हैं, यदि आप यह विश्वास दिलाएँ कि आपकी सरकार हमारे धर्म में हस्तक्षेप नहीं करेगी अर्थात् ऐसे कानून नहीं बनाएगी जिनके अधीन छूतछात को अपराध माना जाएगा, बाल-विवाह बन्द होंगे और विध वा-विवाह की इजाजत होगी, मन्दिरों में हर किसी को जाने की छूट होगी, वर्णव्यवस्था को जन्म की बजाए कर्मों पर आश्रित माना जाएगा इत्यादि। डॉ० मुखर्जी ने कहा- तो हमें शासन करने की आवश्यकता ही क्या है, यदि हम हिन्दू जाति की रक्षा और उन्नति न कर सकें?

यह आचरण हिन्दुत्व का उदाहरण है जिसे हिन्दू सन्त-महन्त-शंकराचार्य मानते हैं। इतिहास साक्षी है आज के बंगलादेश के निर्माण का आधार ऐसी ही घटना है। ढाका के नवाब की सेना में काम करने वाले पण्डित कालीचरण से नवाब की बेटी ने विवाह करने की इच्छा प्रकट की तो नवाब

ने कालीचरण के सामने प्रस्ताव रखा वह चाहे तो बेटी को हिन्दू बना ले, चाहे तो स्वयं इस्लाम स्वीकार कर ले या मौत को स्वीकार कर ले। पण्डित कालीचरण ने अपने गाँव के आसपास के, फिर पुरी के पण्डितों, बनारस, मथुरा, वृन्दावन तक के आचार्यों ने नवाब की लड़की को हिन्दू बनाने का विधान पूछा। सबने उसका विरोध किया, अनादर किया और इस प्रकार धर्म परिवर्तन को शास्त्र विरुद्ध बताया। पं. कालीचरण ने नवाब को इस विवाह से इन्कार कर दिया तथा हिन्दू रहते हुए मरना स्वीकार किया परन्तु जिस दिन उसे मृत्युदण्ड दिया जाना था उस दिन नवाब की बेटी ने कालीचरण और जल्लाद के बीच खड़े होकर घोषणा कर दी कि कालीचरण को मारने वाले की तलवार पहले मुझ पर चलेगी तब कोई कालीचरण तक पहुँच सकेगा इस दृश्य ने कालीचरण का हृदय परिवर्तित कर दिया और उसने इस्लाम स्वीकार करने का प्रस्ताव मान लिया। नवाब की बेटी से विवाह कर वह काले खाँ बन गया और नवाब ने उसकी इच्छा के अनुसार अपनी सेना की कमान उसके हाथ में सौंप दी, फिर उसने जो कत्लेआम किया और बिहार, उड़ीसा, बंगाल, बनारस और जौनपुर तक उसने धावा बोला। उसकी क्रूरता और निर्दयता ने उसका भयंकर नाम काला पहाड़ रख दिया। आज सारा बंगलादेश उसके धार्मिक प्रतिशोध का परिणाम है। इस घटना को उद्धृत करने का उद्देश्य है कि यह परम्परा आज भी हिन्दू समाज में उसके विनाश का कारण बनी हुई है। एक वर्ष में तीन ऐसे कांड चर्चा में आए जिनसे हिन्दू समाज के क्षरण का पता चलता है परन्तु हिन्दू समाज के पास इस क्षरण को रोकने का न कोई उपाय है न सोच। पहली घटना इलाहाबाद उच्च न्यायालय का आदेश जो एक हिन्दू लड़की और मुस्लिम लड़के के प्रेम विवाह के प्रसंग में दिया गया। न्यायालय ने अपनी टिप्पणी में कहा है कि प्रेम किसी का किसी से भी सम्भव और स्वाभाविक है परन्तु एक

ही सम्प्रदाय की लड़की और एक ही सम्प्रदाय के लड़के एक वर्ष में हजारों की संख्या में प्रेम में पड़कर विवाह कर लें यह चिन्ताजनक और अनुसंधान का विषय है। एक वर्ष की अवधि में हजारों प्रेम-विवाह न्यायालय द्वारा कराये गये जिनमें सभी लड़के मुस्लिम थे और सभी लड़कियाँ हिन्दू, ऐसा कौन सा मंत्र है जिसमें यह चमत्कार सम्भव है। न्यायालय ने टिप्पणी कर दी इसलिए इसकी समाचार पत्र में चर्चा हो गई परन्तु यह कार्य रुका नहीं है। मुस्लिम समुदाय इसे क्यों रोके, उसे रोकना भी नहीं चाहिए क्योंकि उसे जनसंख्या का लक्ष्य प्राप्त करना है। प्रश्न उठता है किस हिन्दू ने या हिन्दू संगठन ने इसके निराकरण के प्रयास किये या कोई कदम उठाया क्योंकि ऐसा करना हिन्दू के धर्म शास्त्र में तो लिखा नहीं है। दूसरी घटना को याद कीजिए जिसको लेकर संचार माध्यमों ने व्यक्ति स्वतन्त्रता के नाम पर बहुत शोर मचाया था। घटना भोपाल से सटे हुए बैरागढ़ कस्बे की है। यहाँ पर सिन्धी समुदाय के लोग अधिकांश में रहते हैं। व्यापारी और सम्पन्न हैं, यहाँ के लोगों का अकस्मात् ध्यान गया उनके परिवारों में से थोड़े समय के अन्दर पाँच सौ से अधिक लड़कियों पर अंकुश लगाया कि वे घर से बाहर न घूमें फिरें, इसको लेकर दूरदर्शन पर प्रदर्शन, विरोध, परिचर्चाओं का आयोजन कर व्यक्तिगत स्वतंत्रता की रक्षा का नारा तो बुलन्द किया गया परन्तु इसके पीछे के कारणों तक जाने की परिचर्चा करना आयोजकों को आवश्यक प्रतीत नहीं हुआ।

तभी जुलाई के प्रथम सप्ताह में हिन्दुस्तान टाइम्स में एक समाचार छपा जो बैंगलोर संस्करण के अनुसार इस प्रकार है- 'सी.आई.डी. विल प्रोब हिन्दू मुस्लिम लव मेरेजिज' इस बड़ी खबर में बताया गया है कि महाराष्ट्र विधान सभा में भारतीय जनतापार्टी के दो सदस्यों एकनाथ खाडसे तथा देवेन्द्र फडनवीस ने सरकार से माँग की है कि महाराष्ट्र के गाँवों में बड़ी संख्या में मुस्लिम लड़कों द्वारा हिन्दू लड़कियों से प्रेम-विवाह कर उन्हें

मुसलमान बनाया जा रहा है तथा लड़कियों को खाड़ी के देशों में भी भेजा जा रहा है। महाराष्ट्र सरकार के गृह राज्यमंत्री नितिन राउत ने इस विषय की खबरें मिलने की बात स्वीकार करते हुए इस विषय में सी.आई.डी. जाँच कराने की बात कही। वहीं पर शरद पवार व काँग्रेस राज्यमंत्री आरिफ नसीमखान ने कहा कि कानून में ऐसा कोई प्रावधान नहीं जो दूसरे धर्म में शादी करने से रोकता हो वह केवल भाजपा का राजनीतिक प्रवाद है और मंत्री जैसा नाम से पता लगता है कि मुस्लिम हैं और उनका विचार ठीक है क्योंकि हिन्दू इतर सम्प्रदायों को उनके धार्मिक विचार उन्हें एक समूह में बाँधते हैं अतः सारे देश में उनका आचरण भी उसी प्रकार का होता है परन्तु यहाँ कौन हिन्दू है यह कहना कठिन है। जैन अपने को हिन्दू नहीं मानता, बौद्ध स्वयं को हिन्दू नहीं कहना चाहते, सिक्ख अपने को हिन्दू कहने को तैयार नहीं। दलितों के संगठनों ने नारा दिया है हम हिन्दू नहीं। फिर हिन्दुओं की यह दशा न हो तो क्या आश्चर्य है। आज सम्पूर्ण देश में महाविद्यालयों और विद्यालयों में इस प्रकार की स्थिति देखी जा सकती है, जहाँ हिन्दू लड़कियाँ इस प्रकार के षड्यन्त्र का शिकार बन रही हैं। अजमेर का दुराचार काण्ड वर्षों तक समाचार पत्रों में छाया रहा, जहाँ मुस्लिम लड़कों द्वारा अनेक हिन्दू लड़कियों को अपने चंगुल में फँसाकर उनका यौन शोषण किया गया। इसी प्रकार फिल्मों में काम करने वाले बहुत से मुस्लिम अभिनेताओं की पत्नियाँ तो हिन्दू हैं परन्तु इसके विपरीत होता तो दृष्टिगत नहीं होता। परन्तु हिन्दू समाज की ओर से इसके प्रतिकार के लिए कोई उपाय नहीं किया गया। हिन्दू किसी भी आपत्ति को सामूहिक नहीं मानता यह उसके संस्कार में है यही इसके विनाश का मुख्य कारण है। एक घटना से अपनी सामाजिक स्थिति को समझने में सहायता मिलेगी जो स्वामी विद्यानन्दजी ने अपनी उसी पुस्तक में लिखी है–

असगरी बेगम उर्फ शान्ति देवी – एक बार मैं मुम्बई में

था। मुझे स्मरण आया कि शान्ति देवी तो यहीं कहीं बम्बई में रहती हैं। शान्तिदेवी का पहला नाम असगरी बेगम था। असगरी बेगम को शुद्ध करके शान्तिदेवी बनाया था स्वामी श्रद्धानन्द जी ने। इसी शुद्धि के कारण मुसलमान उनके जानी दुश्मन बन गये थे। उनकी दुश्मनी की परिणति स्वामी जी के बलिदान में हुई थी। मैं अपने एक परिचित के साथ श्रीमती शान्तिदेवी से भेंट करने उनके निवास स्थान पर गया। सामान्य शिष्टाचार के बाद उन्होंने आवाज लगाई-बेबी, अपने चाचाजी के लिए चाय ला। चाय आई। चाय लाने वाली बेबी किन्नी (किरण) को लक्ष्य करके मेरे साथी ने कहा- इसे तो आप जानते-पहचानते होंगे। मेरे 'नहीं' करने पर उन्होंने कहा-अरे! आप इसे नहीं जानते। ये 150 फिल्मों में काम कर चुकी प्रसिद्ध अभिनेत्री तबस्सुम है। तबस्सुम की शादी मेरठ के एक वैश्य परिवार में हुई, किन्तु उसकी बड़ी बहन के लिए हिन्दू लड़का नहीं मिला। 1976 में श्रीमती शान्तिदेवी की मृत्यु हो गई। जिस शान्तिदेवी की शुद्धि के कारण स्वामी श्रद्धानन्द को शहीद होना पड़ा, उसे कबर में दफनाया गया। अन्त्येष्टि संस्कार नहीं हो सका। क्योंकि बम्बई की किसी आर्यसमाज या आर्यसमाजी ने इसमें पुरुषार्थ नहीं किया। लाचार होकर उनकी पुत्री को शान्तिदेवी के मृतक शरीर को दफनाना ही पड़ा। इस प्रकार हम घोषणा तो करते हैं हिन्दुत्व की महानता की, हिन्दू धर्म में स्त्रियों के गौरवपूर्ण स्थान की परन्तु समाज की दशा उसके खोखलेपन और ढौंग को ही उजागर कर रही है। मनु ने कहा है जहाँ स्त्रियों की पूजा होती है वह स्वर्ग है जहाँ अपमान होता है वह नरक है, हमें सोचना होगा आज हम कहाँ खड़े हैं। इन परिस्थितियों में देश में हिन्दू बहुमत कितने दिन बना रह सकता है।

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफला क्रियाः।। मनु.।।

परोपकारिणी सभा, अजमेर

पं. गुरुदत्त की दृष्टि में देवता क्या हैं?
(26 अप्रैल जयन्ती पर)

–लाला लाजपतराय

'प्राचीन संस्कृत साहित्य के इतिहास' में प्रोफेसर मैक्समूलर ने वेदों के एक विशिष्ट अंश के सम्बन्ध में अपनी सहमति दर्शाई है। वे लिखते हैं– "इन प्रारम्भ युगीन पद्यों में एक विशिष्ट आकर्षण है जो किसी अन्य काव्य में उपलब्ध नहीं होता। प्रत्येक शब्द अपने मूल अर्थ को सुरक्षित रखता है, प्रत्येक विशेषण कुछ कहता–सा प्रतीत होता है, प्रत्येक विचार अपनी सूक्ष्म तथा आकस्मिक अभिव्यक्ति के उपरान्त भी, सत्य तथा पूर्ण है। यदि उसके निगूढ़ अर्थ को समझ सकें।" इसी ग्रन्थ में मैक्समूलर आगे लिखते हैं– "वेदों में जो नाम (संज्ञायें) दृष्टि–गोचर होती है वे तरल स्थिति में हैं। वे न तो किसी के विशेषण रूप में ही प्रयुक्त हुई हैं और न व्यक्तिवाचक संज्ञाओं के रूप में। वे व्यवस्थित रूप में हैं जो प्रसंग से पृथक् कर दिये जाने पर अर्थहीन हो जाती हैं।

पं. गुरुदत्त बताते हैं कि वेदों के सम्बन्ध में बनाये गये इस सरल नियम की सायण तथा यूरोपीय विद्वानों द्वारा किस प्रकार उपेक्षा की गई, जिसके परिणामस्वरूप इस धारणा को बल मिला कि वेद में अगणित देवी–देवताओं की पूजा का विधान उपलब्ध होता है। पं. गुरुदत्त लिखते हैं– यह शब्द 'देवता' ही है जो प्रायः भूलों का मूल कारण बनता है और यह अत्यन्त आवश्यक है कि इसके वास्तविक अर्थ तथा तथा उसकी व्यापकता को निर्धारित किया जाय। 'देवता' शब्द में निहित वैदिक ध्वनि को न समझने के ही कारण यूरोपीय विद्वानों ने वेदों में जड़ वस्तुओं की पूजा कल्पित की तथा इस प्रकार उन्होंने वैदिक धर्म को बहुदेववाद से भी निम्न स्तर पर लाकर उसे 'हीनोथीज्म' का नाम देते हुए उसे अनीश्वरवाद की सीमा तक ले आये। कारण यह था कि वे वेदों में उन पौराणिक देवी–देवताओं का उल्लेख मानते हैं। जो प्रचलित अन्धविश्वासपूर्ण व्याख्या पर आधारित है। पं. गुरुदत्त ने

'देवता' शब्द के वास्तविक अर्थ के सम्बन्ध में प्राचीन प्रमाणों को उद्धृत किया है, जैसा कि यह शब्द वैदिक ग्रन्थों में प्रयुक्त हुआ है तथा उन्होंने अनेक उदाहरण देकर यह भी सिद्ध किया कि किस प्रकार अपने अज्ञान तथा प्राचीन प्रमाणों की उपेक्षा करने के कारण यूरोपीय विद्वानों ने वेदों को गलत ढंग से समझा और उनके अर्थ करने में भी गलतियाँ कीं। इस प्रसंग का उपसंहार पं. गुरुदत्त ने अपने कतिपय निष्कर्षों के साथ किया है जिसे पूर्ण रूप से उद्धृत करना ही उचित होगा–

"हम यह देख चुके हैं कि यास्क उन पदार्थों को 'देवता' नाम से अभिहित करते हैं जिनके गुणों का वर्णन मन्त्रों में किया जाता है। तब 'देवता' क्या हैं? वे उन सबके प्रतीक हैं जो मानवी ज्ञान के विषय बन सकते हैं। मनुष्य का सारा ज्ञान दो बातों से परिसीमित होता है– समय और स्थान। 'कारण सिद्धान्त' का हमारा ज्ञान वस्तुतः घटनाओं के क्रम का ज्ञान है तथा यह क्रमिकता काल में एक नियम के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। द्वितीयतः हमारा ज्ञान किसी न किसी वस्तु का ज्ञान होगा तथा वह वस्तु किसी न किसी स्थान पर होगी। वह वस्तु अपने अस्तित्व तथा घटित होने के क्रम में किसी स्थान की अपेक्षा रखेगी। अब ज्ञान के आवश्यक तत्वों पर आयें। मानवी ज्ञान का सर्वांगीण विभाजन विषयगत और विषयीगत ज्ञान है। विषयगत ज्ञान वह वस्तु अपने अस्तित्व तथा घटित होने के क्रम में किसी न किसी स्थान की अपेक्षा रखेगी। अब ज्ञान के आवश्यक तत्वों पर आयें। मानवी ज्ञान का सर्वांगीण विभाजन विषयगत और विषयीगत ज्ञान है। विषयगत ज्ञान वह है जो मानवी शरीर को अपेक्षा नहीं रखता। यह बाह्य संसार के घटनाचक्र का ज्ञान है। जब हम विषयीगत ज्ञान की चर्चा करते हैं तो सर्वप्रथम 'अहंकार–मानवी चेतना, चित्तवृत्ति का उल्लेख होगा। द्वितीय स्थान पर वह आन्तरिक स्थिति आयेगी जिसका परिज्ञान जीवात्मा को होता है। पुनः इनको भी दो प्रकार से विभक्त किया गया है– स्वेच्छा से किये गये कार्य

और शारीरिक क्रियायें।" इसके उपरान्त वे यह निष्कर्ष निकालते हैं कि ज्ञान का हमारा पूर्वकृत विश्लेषण हमें 6 वस्तुओं-समय, स्थान, शक्ति, जीवात्मा, स्वेच्छा से किये गये कर्म तथा शारीरिक क्रिया तक पहुँचाता है अतः इन्हें ही 'देवता' कहना चाहिये और यदि निरुक्त वर्णित वैदिक देवताओं के सन्दर्भ को सत्य माना जाय तो यह स्वीकार करना होगा कि वेद इन्हीं 6 वस्तुओं को देवता कहकर सम्बोधित करते हैं किन्हीं अन्य को नहीं। हमने स्वामी दयानन्द की वैदिक व्याख्या सम्बन्धी नियमों के निर्धारण विषयक सही स्थिति को समझाने के लिए ही इस लम्बे उद्धरण को प्रस्तुत किया है।

2500 वर्षों की दीर्घ अवधि तक वेद-व्याख्या सम्बन्धी इन नियमों की उपेक्षा होती रही जिसका परिणाम यही हुआ कि वेद प्रतिपादित धर्म के विषय में लोगों को भयंकर भ्रान्तियाँ भी होती रहीं। स्वामी दयानन्द द्वारा दिया गया 'वेदों की ओर लौटो' का नारा ही अर्थहीन हो जाता यदि वे वेदों में निहित मूल्यवान कोष को खोलने की कुंजी नहीं दे जाते। अतः हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि स्वामी दयानन्द की शिक्षाओं में यह सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है तथा जो आधार उन्होंने खड़ा किया उसकी नींव तुल्य है।

हम यह जानते हैं कि हिन्दू और यूरोपीय दोनों श्रेणियों के विद्वान् दयानन्द कृत वेदभाष्य तथा वेद व्याख्यान पर घोर आपत्ति प्रकट करते हैं। वे इसे अत्यधिक कल्पना-आधारित तथा ऊहायुक्त मानते हैं। परन्तु स्वामीजी का एक महान विद्वान् तथा महान सुधारक होना उनकी विपुलकाय वेद व्याख्याओं की सत्यता पर ही आश्रित नहीं है। हमारे लिये जो बात महत्तव की है वह है उनके द्वारा निर्धारित सिद्धान्त (1) वेदों को पढ़ने तथा पढ़ाने का प्रत्येक मनुष्य को अधिकार (2) प्रत्येक आर्य का वेद के पठन-पाठन को कर्त्तव्य मानना तथा (3) उपर्युक्त वर्णित वेद व्याख्या के सिद्धान्त। यही बातें उन्हें ख्याति के मन्दिर में सुप्रतिष्ठित करने के लिये पर्याप्त थीं, किन्तु उन्होंने इससे भी अधिक किया है।

शहीद खुदीराम बोस ने गीता लेकर चूमा फन्दा

(30 अप्रैल 1908)

-शिवकुमार गोयल

उसने अपने जीवन के केवल 17 वसन्त देखे थे। 17 वर्ष की अल्पायु में ही उसने स्वातन्त्र्य लक्ष्मी का अभिषेक अपने रक्त से किया था। माँ भारती की स्वाधीनता के लिए प्रारणोत्सर्ग करने वाला वह दीवाना था 'खुदीराम बोस'। कलकत्ता के एक स्कूल का छात्र था। अंग्रेज अधिकारियों द्वारा भारतीयों पर किए जा रहे अत्याचारों को देखकर उसका बाल हृदय विद्रोह कर उठा। पुस्तकों का रास्ता छोड़कर उस तरुण ने तलवार की धार का रास्ता अपना लिया। कलकत्ता हाईकोर्ट ने जज मि. किंग्सफोर्ड ने भारतीय नवयुवकों को कालापानी व फाँसी का दण्ड देकर स्वाधीनता की चिंगारी को दबाने का प्रयास किया। उसने युवकों को कड़े से कड़े दण्ड दिए, उन्हें फाँसी के रस्सों में लटकवाया। किंग्सफोर्ड के इन अमानुषिक अत्याचारों ने ही तरुण खुदीराम का बाल हृदय झकझोर दिया। उसने पुस्तक फेंककर पिस्तौल थाम ली अपने नन्हें-नन्हें हाथों में।

मि. किंग्सफोर्ड की बदली कलकत्ता से मुजफ्फरपुर हुई तो तरुण खुदीराम बोस भी अपने साथी प्रफुल्लकुमार चाकी के साथ मुजफ्फरपुर जा पहुँचा। हृदय में केवल एक ही लगन थी, एक ही तड़प-भारतीयों पर निर्मम अत्यचार करने वाले किंग्सफोर्ड को मजा चखाना, उससे प्रतिकार लेना। मुजफ्फरपुर के क्लब में एकत्रित अंग्रेज अधिकारी खाने-पीने एवं तफरी करने में मस्त थे। रात्रि के 8 बजे क्लब के बाहर एक जोरदार भयंकर धमाका हुआ। क्लब में उपस्थित सभी अंग्रेज

अधिकारियों के हृदय दहल उठे। क्षण-भर में ही समस्त नगर में समाचार फैल गया कि स्थानीय अंग्रेज वकील मि. पी. केनेडी की गाड़ी को बम से उड़ा दिया गया। समस्त नगर में आतंक छा गया। पुलिस ही पुलिस दिखाई देने लगी।

खुदीराम बोस एवं उसके वीर साथी प्रफुल्ल कुमार चाकी ने यह बम किंग्सफोर्ड की कार समझकर फेंका था। दोनों की गाड़ी का रंग एक जैसा होने से भूल से केनेडी की गाड़ी पर फेंक दिया गया। सौभाग्यवश किंग्सफोर्ड तो बच गया। किन्तु केनेडी को दुर्भाग्य ने आ घेरा। उसकी पत्नी एवं पुत्री मारी गई।

बम फेंकते ही दोनों वीर तरुण पुलिस की आँखों में धूल झोंककर भाग निकले। खुदीराम भागते-भागते रातों-रात 25 मील चलकर बेनी ग्राम में जा पहुँचा। वह भूखा-प्यासा था। 25 मील तक भागने के कारण बुरी तरह से थक गया था। स्टेशन के पास एक दुकान पर खड़ा वह चने खरीद रहा था कि उस समय स्टेशन मास्टर ने एक बाबू से कहा- "मुजफ्फरपुर में अंग्रेज वकील की मेम व लड़की को बम से उड़ा दिया गया। हत्यारों को गिरफ्तार करने के लिए वारण्ट आए हैं। इस गाड़ी की तलाशी लेनी है।" वीर खुदीराम ने सुना तो सहसा उसके मुख से निकल पड़ा- "हैं! क्या किंग्सफोर्ड बच गया?" पास में खड़े एक पुलिस कांस्टेबल ने युवक के मुख से ये शब्द सुने तो उसे सन्देह हो गया। खुदीराम तुरन्त भाग निकला। पुलिस के सिपाहियों ने उसका पीछा किया। बुरी तरह से भूखा-प्यासा व थका होने के कारण वह मील तक भागने के बाद गिरफ्तार कर लिया गया। उसके पास से माउजर रिवाल्वर एवं 30 कारतूस बरामद हुए। जिस समय खुदीराम को रेल द्वारा मुजफ्फरपुर

लाया गया, उस समय जनता की भारी भीड़ उस वीर तरुण का स्वागत करने के लिए स्टेशन पर उमड़ पड़ी।

उधर प्रफुल्ल चाकी भागकर समस्तीपुर जा पहुँचा। समस्तीपुर से वह कलकत्ता जाने वाली ट्रेन में सवार हुआ। उसी डिब्बे में नन्दलाल बनर्जी नामक पुलिस सब-इंस्पेक्टर भी यात्रा कर रहा था। उसने मुजफ्फरपुर के हत्याकांड का समाचार सुन लिया था। चाकी को देखते ही उसे सन्देह हो गया। 'चाकी' ने नन्दलाल को अपनी ओर घूरते देखा तो वह भी ताड़ गया। उसने अगले स्टेशन पर गाड़ी के रुकते ही डिब्बा बदल लिया। उधर नन्दलाल ने स्टेशन से तार द्वारा पुलिस को सूचना दे दी। मोकामा स्टेशन पर पुलिस ने गाड़ी को घेर लिया। प्रफुल्ल चाकी ने वीरतापूर्वक पुलिस पर गोलियाँ दागीं। उसने देशद्रोही नन्दलाल पर भी गोली का वार किया। किन्तु निशाना चूक गया। जब वीर चाकी ने बचने का कोई उपाय न देखा तो उसने स्वयं को गोली मारकर अपने प्राणों को स्वाधीनता के लिए बलिदान कर दिया। खुदीराम, ने मुजफ्फरपुर के जिला मजिस्ट्रेट के सामने निर्भीकतापूर्वक स्वीकार किया- "क्रान्तिकारियों पर किए जा रहे अमानवीय अत्याचारों का प्रतिकार लेने के लिए मैंने ही बम फेंककर हत्या की थी।"

'मुजफ्फरपुर लोमहर्षक हत्याकांड' के नाम से यह घटना समस्त विश्व में फैल गई। खदीराम पर न्यायालय में मुकदमा चलाया गया तो पैरवी के लिए किसी भी वकील का सामने आने का साहस न हुआ। वकील भी अंग्रेज नौकरशाही से आतंकित थे। अन्त में एक बंगाली वकील बाबू कालिदास बोस ने साहस करके अपना नाम पैरवी के लिए प्रस्तुत किया। वीर खुदीराम ने न्यायालय में भी निर्भीकतापूर्वक स्वीकार किया- "मैंने तो बम फेंककर हत्या की थी।" कई

दिनों तक मुकदमे का यह नाटक चलता रहा। अन्त में पूर्व-निश्चित निर्णय के अनुसार मजिस्ट्रेट ने 'मृत्युदण्ड' का फैसला सुना दिया।

11 अगस्त का दिन फाँसी के लिए निश्चित किया गया। फाँसी की कालकोठरी में 18 वर्षीय तरुण खुदीराम मातृभूमि की वेदी पर अपने प्राणों की आहुति चढ़ाने के दिन की उत्सुकता से प्रतीक्षा करने लगा। प्रतिदिन श्री दुर्गासप्तशती एवं गीता के पाठ एवं भगवद्भजन में तल्लीन युवक अपने शरीर की सुधबुध खो बैठा। प्रातः गीता हाथ में लेकर खुदीराम बड़ी मस्ती से झूमता हुआ फाँसीघर की ओर बढ़ा और देखते ही देखते माँ का वह पागल पुजारी उछलकर तख्ते पर चढ़ गया। फाँसी का फन्दा अपने सुकोमल हाथों से गले में डाला और "स्वातन्त्र्य लक्ष्मी की जय" का उद्घोष कर उसने स्वाधीनता की वेदी पर अपने प्राणों को होम कर डाला। शमशान-भूमि पर हजारों नर-नारियों ने एकत्रित होकर इस वीर हुतात्मा को हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित की।

पिलखुवा, गाजियाबाद

शहीद भगतसिंह के विचार (Quotations)

• व्यक्तियों को कुचलकर, वे विचारों को नहीं मार सकते।

• They may kill me, but they cannot kill my ideas. They can crush my body, but they will not be able to crush my spirit.

• Life is lived on its own, Other's shoulders are used only at the time of funeral.

• I will climb the gallows gladly & show to the world as to how bravely the revolutionaries can sacrifice themselves for the cause.

• This is not the time to marry. My country is calling me. I have taken a vow to serve the country with my heart & soul.

भारतीय इतिहास से यह खिलवाड़ कब तक

-राजेश बरनवाल

एक दैनिक समाचार पत्र में समाचार पढ़ने को मिला कि एनसीईआरटी की 11वीं एवं 12वीं की कक्षाओं के लिए नई प्रकाशित पुस्तक 'प्राचीन भारत' में श्री राम और श्रीकृष्ण की ऐतिहासिकता पर ही प्रश्नचिह्म खड़ा कर दिया है। अयोध्या एवं मथुरा से इनका कोई सम्बन्ध नहीं रहा है। इसी प्रकार एनसीईआरटी की 11वीं की पुस्तक 'मध्यकालीन भारत' में भी पृथ्वीराज चौहान को कायर तथा भगोड़ा साबित करते हुए गद्दार जयचन्द को वीर बताने का प्रयास किया गया है। प्रश्न उठता है कि भारत के इतिहास के साथ कौन तथा क्यों इस प्रकार खिलवाड़ कर रहा है।

मुस्लिम एवं अंग्रेजों के आगमन से पूर्व भारत में गुरुकुल शिक्षा प्रणाली थी। जहाँ वानप्रस्थ अथवा गृहस्थ गुरु अपने आश्रमों में अपने छात्रों का चरित्र गढ़ते हुए उन्हें धार्मिक और देशभक्त बनाते थे। यहाँ नालन्दा, तक्षशिला, विक्रमशिला जैसे विश्वविद्यालय रहे हैं। इन्हीं आश्रमों एवं विश्वविद्यालयों से राम-कृष्ण, लव-कुश, पांडव, चन्द्रगुप्त जैसे अनेकवीर एवं देशभक्त नागरिकों का निर्माण हुआ। इन वीरों के कारखानों अर्थात् विश्वविद्यालयों पर विदेशी आक्रान्ताओं की कुदृष्टि पड़ी। उन्होंने इन विश्वविद्यालयों को भूमिसात कर उनके बृहत् पुस्त्कालयों को भस्मीभूत कर दिया। परन्तु निजी गुरुकुलों को रोक न सके। उनकी शिक्षा-व्यवस्था बहुत ही उत्तम थी। इन गुरुकुलों से नित्य देशभक्त एवं विद्वान् नागरिकों का निर्माण हो रहा था।

अंग्रेज जब इस देश में आये तो उन्हें शक्तिशाली परन्तु बँटे हुए हिन्दुस्तान को गुलाम बनाने में अधिक समय न लगा। सन् 1857 के स्वाधीनता संग्राम में अंग्रेजों ने अनुभव किया

कि हिन्दू समाज वीर तथा देशभक्त है। उसे यह प्रेरणा गुरुकुल की शिक्षा-प्रणाली से भी मिल रही है और मुस्लिमों में भी राष्ट्रभक्ति का भाव बढ़ेगा तो भारत अधिक दिन गुलाम नहीं रह सकेगा।

अतः अंग्रेजों ने मुस्लिम धर्मान्धता एवं कट्टरता को हिन्दुओं के विरुद्ध उभारकर अंग्रेजों के विरुद्ध पनपती हिन्दू-मुस्लिम एकता को नष्ट कर दिया। हिन्दू शक्ति को कमजोर करने के लिए सिखों को हिन्दुओं से अपना स्वतंत्र अस्तित्व बताने के लिए प्रेरित किया।

अंग्रेजों की नीति के अनुसार मैकाले ने गुरुकुल-शिक्षा-प्रणाली को नष्ट करने के लिए अंग्रेजी-शिक्षा प्रारंभ कर दी। उसकी योजना थी कि इस प्रणाली से इसके छात्र मात्र जीविकोपार्जन को ही शिक्षा का उद्देश्य समझते हुए मात्र क्लर्क बनकर रह जायेंगे तथा केवल रंग से ही भारतीय रहेंगे परन्तु आचार-विचार से पूरे अंग्रेज बन जायेंगे। मैकाले ने अपने पिता को पत्र लिखा था कि हमारे अंग्रेजी स्कूल अद्‌भुत रूप से सफल रहे हैं। हमारे यहाँ से शिक्षा प्राप्त हिन्दू अपने धर्म पर स्थिर नहीं रह सकता है। इस शिक्षा योजना से कोई भी मूर्तिपूजक नहीं रहेगा।

उधर मैक्समूलर वेदों तथा अन्य शास्त्रों के अनुवाद द्वारा यह सिद्ध करने पर लगे थे कि वह केवल गड़रियों के गीत हैं, वह आदि मनुष्य के अपरिपक्व मस्तिष्क की कथाएँ व कल्पनाएँ हैं।

मैक्समूलर श्री एन. के. मजूमदार (एक ब्रह्मसमाजी) को लिखते हैं:- "आप तो जानते ही हैं कि कितने ही वर्षों से मैं भी आप ही के समान भारत में प्रचलित धर्म को शुद्ध करने में लगा हुआ हूँ जिससे वह अन्य धर्मों के समान विशेष रूप से ईसाई धर्म जैसा पवित्र बन जाए। मुझे आप

विशेषरूप से लिखें कि आपको आपके देशवासियों को ईसा के धर्म में आने में क्या कठिनाई है?"

मैक्समूलर ने एक व्यक्ति विरयाम को पत्र लिखाः– "दयानन्द सरस्वती जैसे लोगों से सावधान रहना चाहिए, वे वेद का इस प्रकार अर्थ कर रहे हैं कि वेद बहुत उच्च व वैज्ञानिक विचारों के भण्डार हैं।"

ईसाई धर्म सृष्टि–रचना को 4004 ईसाई पूर्व में मानता है। परन्तु भारत के इतिहास में 5000 वर्ष पूर्व महाभारत युद्ध प्रारंभ हुआ था। फिर जलप्लावन से महाभारत युद्ध तक के इतिहास में कितने ही राजाओं के नाम मिलते हैं। पुनः जलप्नावन से पूर्व स्वायम्भुव मनु, ऋषभदेव, भारत, ध्रुव, वेन, पृथ दक्ष आदि के नाम आते हैं। इस प्रकार हमारी सृष्टि रचना का काल करोड़ों वर्षों का रहा है। इससे भारतीय मान्यताएँ ईसाई मान्यताओं से श्रेष्ठ साबित हो रही थीं।

अंग्रेज–सरकार ने ऐसे–ऐसे विद्वान चुन–चुनकर इतिहास लिखने में लगाये, जो भारत की संस्कृति व धर्म को तुच्छ प्रकट कर सकें तथा उसके इतिहास को विकृत किया जा सके। विलियम जोन्स ने अपना निष्कर्ष निकालते हुए राम का काल 1200 ईसा पूर्व माना तथा जलप्लावन के लिए इसमें कुछ और वर्ष लगाने को कहा। तथा परीक्षित का समय 1017 ईसा पूर्व माना। अंग्रेज इतिहासकारों ने भारतीय ग्रन्थों को नकारते हुए वेद की रचना का काल 1200 ईसाई पूर्व बताया है। अर्थात् हिन्दुओं के युगों की गणना 1400+1800=3200 ईसा पूर्व बताया है। जबकि चीन के प्रथम राजा का सम्वत् 9 करोड़ 60 लाख वर्ष से ऊपर है तथा परम्परा में वैवस्वत मनु सम्वत् 12 करोड़ वर्ष से अधिक है।

जब हमारा देश स्वतंत्र हुआ तो आशा जगी कि अब देश के इतिहास को ठीक कर लिया जाएगा। परन्तु भारत के

प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू एवं उनके उत्तराधिकारी मैकाले की उस शिक्षा-पद्धति से प्रभावित थे, जिससे भारत का शासक-वर्ग भारत के ज्ञान व वैभव से अपरिचित होकर हिन्दुओं की निन्दा करने में भी लाभ मानते थे। बताया जाता है कि स्वतंत्र भारत के प्रथम शिक्षा मंत्री मौलाना आजाद की अध्यक्षता में 1950 की हुई बैठक में वेदों का काल 2000 से 1500 ईसा पूर्व मान लिया गया। अतः यह बात स्पष्ट हो गई कि भारत की तत्कालीन नेहरू सरकार भी उतनी ही विदेशी चिन्तन से प्रेरित थी जितनी अंग्रेज सरकार। बाद के कांग्रेसी सरकारों ने भी इसी नीति पर चलते हुए अपने आस-पास कम्युनिस्ट लेखकों को खड़ा कर दिया। उन्होंने समय-समय पर भारत के इतिहास के साथ खिलवाड़ किया। उन लोगों ने भी इतिहास को विकृत करने का प्रयास जारी रखा। आर्य विदेशी थे, वे गोमास भक्षण करते थे। भारतीय वीर, योद्धा नहीं कायर थे। मुस्लिम आक्रमणकारियों ने मन्दिरों को इसलिए तोड़ा क्योंकि वह अनैतिकता के अड्डे बन गए थे। इस विकृत इतिहास को पढ़-पढ़कर हिन्दुओं का हृदय दुःखी होता था।

धीरे-धीरे आर्य विद्वानों ने मनुस्मृति, वेद-पुराण, रामायण-महाभारत पर शोध प्रारम्भ कर दिया। 1972 ई. में गठित बाबा साहब आप्टे स्मारक समिति ने मा. मोरोपंत पिंगले की देखरेख में भारतीय इतिहास संकलन योजना का श्री गणेश किया। भाजपा के शासन में मुरली मनोहर जोशी ने विकृत इतिहास को परिशोधित करवाना प्रारम्भ कर दिया। जिसका विरोधियों ने भगवाकरण कहकर विरोध किया। फिर कांग्रेसियों का शासन आने पर मा. अर्जुन सिंह ने पुनः इतिहास को तोड़ना-मरोड़ना शुरु कर दिया।

इसी क्रम में एन.सी.ई.आर.टी. की इतिहास की पुस्तकों में

राम-कृष्ण के अस्तित्व को ही नकार दिया गया और राम को 2000 ईसा पूर्व का तथा कृष्ण को 200-300 ईसा पूर्व का मानते हुए उस समय के अयोध्या-मथुरा का कोई अस्तित्व ही नहीं माना और इसी के आधार पर राम-कृष्ण की कथा को कल्पित कथा माना है। यह भी उल्लेखनीय है कि 'नासा' द्वारा खींचे गये चित्र में कन्याकुमारी से श्रीलंका तक समुद्र में एक रेखा नजर आई है जो शायद राम द्वारा बनवाया गया सेतु रहा हो। इसी प्रकार समुद्र में डूबी हुई श्रीकृष्ण की द्वारिका भी मिली है।

वस्तुतः इसी 1191ई. में तराईन के मैदान में पृथ्वीराज चौहान के नेतृत्व वाली भारतीय सेना से गौरी हार गया था। परन्तु पृथ्वीराज ने हाथ आए शत्रु को खत्म कर दिया। इसी बीच संयोगिता प्रकरण को लेकर जयचन्द की पृथ्वीराज से अनबन चलने लगी। पुनः गौरी ने पृथ्वीराज पर आक्रमण कर दिया। तराईन में ही लड़ी गई इस लड़ाई में देशद्रोही जयचन्द गौरी के साथ था। अन्य कई राजाओं ने भी आपसी शत्रुता के कारण पृथ्वीराज का साथ नहीं दिया। पृथ्वीराज की सेना के भी कई बड़े महारथी पूर्व लड़ाइयों में मारे जा चुके थे। परिणाम बड़ी वीरता से लड़ने के बावजूद पृथ्वीराज की हार हुई। गौरी ने बन्दी शेर को गजनी भेज दिया, क्षमा नहीं किया, उस कृतघ्न सर्प गौरी ने पुनः 1195 ई. में जयचन्द पर आक्रमण कर दिया, और जयचन्द मारा गया। गौरी जब वापस गजनी आया तो अंधे हो चुके पृथ्वीराज ने अपने साथी कवि चन्दवरदायी के सहयोग से शब्दभेदी बाण द्वारा दुष्ट गौरी को मार डाला और दोनों ने आत्महत्या कर ली। परन्तु इतिहास से खेलने वाले ये इतिहास-हन्ता न जाने कब रुकेंगे?

हीरापुर, धनबाद (झारखण्ड)

मेघालय में ईसाइयत और हिन्दी

–दयाराम पोद्दार

भारत के उत्तर-पूर्व में स्थित पूर्व का असम राज्य वर्तमान में सात स्वतन्त्र राज्यों के रूप में पूर्वांचल की सात बहनों के रूप में जाना जाता है, जिसमें से मेघालय राज्य भी एक है। मेघालय के पूर्व राज्यपाल मधुकर दिघे ने अपनी आत्मकथा 'मेरी लोकयात्रा' के नाम से लिखी है। इस पुस्तक में मेघालय के पूर्व राज्यपाल के रूप में उन्होंने अपने अनुभव 'पूर्वांचल की ओर' नाम से एक पुस्तक में पृथक् रूप से प्रकाशित किए हैं। प्रसंगवश उन्होंने मेघालय में ईसाइयत और हिन्दी के सम्बन्ध में भी रोचक जानकारी दी है।

मेघालय की राजधानी शिलाँग समुद्रतल से पाँच हजार फीट की ऊँचाई पर स्थित पर्वतीय स्थान है यहाँ खासी, जयंतिया और गारो तीन जातियाँ ही प्रमुख हैं। मेघालय का वर्तमान राजभवन 1897 ई. के भूकम्प के बाद बना है। यह भारत का एकमात्र राज-भवन है जिसके भवन की नींव से लेकर छत एवं खपरैल तक सभी वर्मा-सागवान (टीक) की अच्छी लकड़ी का बना हुआ है।

मेघालय में ईसाई धर्म माननेवालों की संख्या सत्तर-पिचहत्तर प्रतिशत है जबकि नागालैंड में 80 प्रतिशत और मिजोरम में 75 प्रतिशत ईसाई हैं। यहाँ ईसाई मिशनरियों ने कष्ट सहन कर अपने धर्म का प्रचार किया। 1875-80 ई. में यहाँ प्रचार में लगे हुए एक ईसाई मिशनरी की औसत निवास का समय केवल 6 महीने तक ही था क्योंकि तत्कालीन असम में वे लोग या तो मलेरिया या डायरिया से मर जाते थे अथवा आदिवासियों द्वारा मार दिये जाते थे, यद्यपि अंग्रेजी साम्राज्य की पूरी ताकत ईसाईयत के साथ थी पर अपने धर्म प्रचार के लिये मिशनरियों द्वारा कष्ट सहन करने और उससे प्रेरित होकर हिन्दू धर्माचार्यों और हिन्दू संगठनों को यहाँ कार्य करने की आवश्यकता अभी भी बनी हुई है। यहाँ अभी केवल रामकृष्ण मिशन सेवा कार्य करता है। यह ईसाइयों की तरह धर्मान्तरण करता कराता है। मेघालय के शिलांग और तूरा में आर्यसमाज भी कार्यरत है पर उसके कार्यों की जानकारी

अप्राप्त है। मेघालय में आदिवासियों ने ईसाइयत को तो स्वीकार किया है पर उनका मन-परिवर्तन नहीं हुआ है। वे अभी भी अपनी पुरानी परम्पराओं का ही पालन करते हैं। असम में असमिया को राजभाषा न बनने देने और इसके विरोध में आदिवासियों को उकसाया गया और हिन्दी को राजकाज की भाषा बनाने के लिए और हिन्दी को पूर्णतया आत्मसात् होने तक अंग्रेजी का उपयोग करने का प्रस्ताव नेताओं द्वारा 1960 ई. में किया गया था। यह प्रस्ताव वैसा ही था जैसा हिन्दी के लिये संविधान में व्यवस्था की गई थी। पर खेद की बात है कि प्रस्तावानुसार हिन्दी के प्रचार और पढ़ाई के लिये संविधान में व्यवस्था की गई थी। पर खेद की बात है कि प्रस्तावानुसार हिन्दी के प्रचार और पढ़ाई के लिये सम्यक प्रयत्न नहीं किये गए। पूर्वांचल के मणिपुर में हिन्दी का प्रचार पहले से ही है। अरुणाचल में सेना के अधिक समय तक रहने के कारण तथा प्रादेशिक राजभाषा होने के कारण वहाँ हिन्दी अधिक बोली जाती है पर अन्य राज्यों में हिन्दी की स्थिति अच्छी नहीं है। इसमें दोष केन्द्रीय सरकार का भी है। फलतः मेघालय में अंग्रेजी ही कामकाज की भाषा है और यह लोगों की अपनी भाषा की तरह मातृभाषा के सदृश हो गई है। मेघालय की खासी और गारो भाषाओं की लिपि पहले बंगला थी पर अब यह रोमन लिपि में परिवर्तित हो गयी है। खासी भाषा में हिन्दी और अंग्रेजी दोनों के शब्द मिलते हैं। खासी में फुटबाल का उच्चारण 'फुटबोल' है। इसी प्रकार 'ब्हामलिन को बागोलिन, कम्बल को किंबोल, बक्सीस को बोक्सीस, दुःख को डुक, दूध को दूद, मुल्क को मुलूक, किस्मत को किसमोट, घी को खी, मक्खन को माकोन, मैदा को मइदा, रोटी को रुटी, चीनी को सिनी कहा जाता है। नमस्कार करने धन्यवाद देने या आभार प्रदर्शित करने के लिये खासी भाषा में 'खूब्लई' कहा जाता है। इसे रोमन लिपि में लिखने पर सात अक्षर लिखने पड़ेंगे परन्तु हिन्दी में केवल साढ़े तीन अक्षर होंगे। जनहित और राष्ट्रहित में मेघालय में हिन्दी और हिन्दू धर्म के प्रचार और प्रसार के लिये लोगों को आत्मचिन्तन कर तदनुकूल कदम उठाना चाहिये।

झारखण्ड राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा, रांची

इस्लामी शिक्षा में सुधार बिना आतंकवाद मिटना असंभव

-प्रो. जयदेव आर्य

विश्व में जिस प्रकार की गति से आतंकवाद बढ़ रहा है और राजनीतिज्ञ लोग अनेक प्रकार के भ्रम फैला कर आतंकवादियों की सहायता कर रहे हैं, वह मानवता की रक्षा के लिए अत्यन्त खतरनाक है। हिन्दुस्तान टाइम्स 17 मई 2005 में इस्लामी आतंकवाद के विषय में दो समाचार प्रकाशित हुए हैं, जिनमें एक का सम्बन्ध पाकिस्तान, अफगानिस्तान और अमेरिका से तथा दूसरे का भारत और पाकिस्तान से है। अमेरिकन मैगज़ीन 'न्यूजवीक' ने अपने अंक में एक समाचार दिया था कि अमेरिका के 'ग्वाटानामो बे' में आतंकवादियों से पूछताछ करने वाले सिपाहियों ने कुरान का अपमान किया। उसे शौचालय की सीट पर रख दिया और फ्लश भी चला दिया। न्यूजवीक के इस समाचार के कारण अफगानिस्तान में दंगा हो गया और पंद्रह व्यक्ति मारे गये।

न्यूजवीक ने आरोप लगाया है कि पाकिस्तान के प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ बने क्रिकेट खिलाड़ी इमरान खान ने पाकिस्तान में अपनी एक प्रैस कान्फ्रैन्स में हमारा यह समाचार पढ़ कर सख्त प्रतिक्रिया व्यक्त की और इस्लाम के अपमान के विरुद्ध हो हल्ला मचाया। इसके बाद वहाँ के मौलवियों ने पत्र के विरुद्ध विषैले बयान दिये, पाकिस्तानी सरकार के अधिकारियों ने उनका समर्थन किया और स्थानीय रेडियो ने इस समाचार को सारे अफगानिस्तान में फैला दिया। इसके परिणाम स्वरूप अमेरिका के हिमायती हामिद करजई के विरोधी इस्लामी क्रान्तिकारियों ने इसका लाभ उठाया और हिंसा फैला दी।

दूसरे समाचार के अनुसार दिल्ली पुलिस ने लश्करे-तोयबा के एक कार्यकर्ता हारून रशीद को गिरफ्तार किया। यह व्यक्ति हिन्दुस्तान एयरोनाटिक्स लि. कानपुर में पहले इन्जीनियर था और अभी सिंगापुर से इन्दिरा गाँधी हवाई अड्डे पर उतरा था। यह बिहार में सिवान का रहने वाला है। उसका षड्यन्त्र था कि देहरादून में भारतीय सैनिक अकादमी और कानपुर की एच.ए.एल. इकाई, जिसमें वह पहले सेवा कर चुका था, पर

आक्रमण किया जाय। वह पहले सिमी का सदस्य भी रहा था और अंसार अर्थात् कमाण्डर के पद पर पहुँच चुका था। तीन मुस्लिम आतंकवादियों शम्स आमिर और शाहनवाज ने इसे आतंकवादी संस्था के लिए कार्य करने के लिए प्रेरित किया था। अब उस पर अपराधपूर्ण षड्यन्त्र करने और देश के विरुद्ध युद्ध छेड़ने आदि की अनेक धाराएँ लगाई गई हैं। उसके पास अब्दुल अजीज से प्राप्त ढाई लाख रुपये भी मिले। शम्स और शाहनवाज पहले मार्च मे उत्तम नगर, दिल्ली में पुलिस के मुकाबले में मारे गये थे और इसके पश्चात् पुलिस को भारी शस्त्रास्त्र मिले थे।

इन दो घटनाओं से अनेक महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष प्राप्त होते हैं। प्रथम निष्कर्ष यह है कि विश्व में अच्छे से अच्छे शिक्षित और ऊँचे पदों पर कार्य कर रहे मुसलमान आतंकवाद और हिंसा फैलाने में किसी से पीछे नहीं रहते। वे स्वयं को अधिक से अधिक कट्टर मुस्लिम सिद्ध करना चाहते हैं और मुस्लिम जनता में अपनी लोकप्रियता स्थापित करने और उनके वोट अर्जित करने का मूल मन्त्र मानते हैं, और प्रोत्साहन देते रहते हैं। दूसरा निष्कर्ष यह है कि दुनिया भर के मुसलमानों को कुरान का अपमान तो दिखलाई पड़ता है परन्तु वे दूसरे मतों के मान्य ग्रन्थों, महापुरुषों, धर्मस्थानों और अनुयायियों के साथ जो क्रूर व्यवहार करते आ रहे हैं वह उनको चिन्तित नहीं करता।

इस घटना से निष्कर्ष निकलता है कि इस देश में हमारे सैक्युलररिस्ट राजनीतिज्ञ भारतीय जनता में अनेक प्रकार की भ्रान्तियाँ फैला कर परोक्ष रूप से इस्लामी आतंकवाद का समर्थन कर रहे हैं। उनके द्वारा फैलाई गई अनेक भ्रान्तियाँ लोगों को उलझन में डालती हैं। प्रथम बात वे कह रहे हैं कि आतंकवाद का कारण मुस्लिमों में शिक्षा और विशेषकर विज्ञान की शिक्षा का अभाव और गरीबी है तथा उनका इस्लाम के सच्चे स्वरूप सें अनभिज्ञ होना है। परन्तु इन घटनाओं के विश्लेषण से उनकी ये सब बातें सर्वथा अयुक्त सिद्ध होती है। हारून रशीद कोई जाहिल व्यक्ति नहीं था, शिक्षित था और वह भी इंजीनियर था। गरीब नहीं था, बहुत

अच्छे पद पर था, भारत में रहता था पर देशद्रोह करने में उसे किसी प्रकार की लज्जा और आत्मग्लानि नहीं हुई। वह एक आंतकवादी मुस्लिम छात्र संगठन का कार्यकर्ता था और विदेशों से भारी रकम लेकर भारी हिंसा और रक्तपात करने को तैयार था। यदि वह अपने इस घृणित उद्देश्य में सफल हो जाता तो न जाने कितने हवाई जहाजों को वह नष्ट कर देता। एच.ए.एल. में उच्च अधिकारी होने के कारण उसे उसकी गहरी जानकारी प्राप्त करने की जो सुविधा प्राप्त हुई, उसका दुरुपयोग उसने उसे ही नष्ट कर देने के लिए किया। देश में ऐसा निकृष्ट और आतंकवादी कार्य करने वाले यह अकेले मुस्लिम बुद्धिजीवी नहीं हैं, अपितु पहले भी अनेक ऐसे बुद्धिजीवी प्रकाश में आ चुके हैं। जाकिर हुसैन कालेज दिल्ली तथा कश्मीर विश्वविद्यालय के कई प्राध्यापकों के नाम भी ऐसे काण्डों में प्रसिद्ध हो चुके हैं। विश्व व्यापार केन्द्र पर हुए आक्रमण के षड्यन्त्र में कुछ अमेरिकन मुस्लिम भी सम्मिलित रहे हैं। इसलिए डॉ. अम्बेडकर जैसे विद्वान् ने अपनी प्रख्यात पुस्तक **'थॉट्स ऑन पाकिस्तान'** में स्पष्ट रूप से कहा है कि मुस्लिम किसी गैर–इस्लामी देश में विश्वसनीय नहीं हो सकते, यह बहुत सीमा तक ठीक ही है। इस आरोप का विरोध करने वाले जो यह युक्ति देते हैं कि देश में देशद्रोह के कार्यों में भाग लेने वाले हिन्दुओं की संख्या मुस्लिमों से कहीं अधिक है, वे यह भूल जाते हैं कि हिन्दुओं की जनसंख्या मुस्लिमों से कई गुना अधिक है। अतः उनमें संख्या में कुछ अधिक काली भेड़े निकल आती हैं तो इससे हिन्दू समाज पर इस तरह उँगली नहीं उठाई जा सकती जैसे मुस्लिम समाज पर उठती है। पुनः जो भी हिन्दू होने का कभी दावा नहीं करते, जबकि सभी मुस्लिम देशद्रोही कट्टर मुस्लिम होने का दावा करते हैं जो भी हिन्दू देशद्रोह के कार्यों में लिप्त होते हैं वे धन आदि के भौतिक लालच से ऐसे कार्य करते हैं क्योंकि वे हिन्दुत्व के प्रति एकनिष्ठ नहीं होते। यह ठीक है कि सारे मुस्लिम आतंकवादी नहीं हैं, परन्तु मुस्लिम विद्वान् भी यह मानते हैं कि दुनिया में प्रायः जितने आतंकवादी हैं वे सभी मुस्लिम हैं। तो इसका कारण क्या है?

कारण है इस्लाम की शिक्षा। जो इस्लाम को शान्तिप्रिय धर्म बताते हैं, वे न तो इस्लाम के कोई अधिकारी विद्वान् हैं और न ही उनकी मुसलमानों में कोई पूछ है। तब उनका कहना किस प्रकार से ठीक माना जा सकता है! मुस्लिमों का दावा है कि उनके समाज में कुरान को याद करने वाले हाफिजों की संख्या अन्य मजहबों से बहुत अधिक हैं, तो ऐसी स्थिति में इस्लाम यदि शान्ति प्रिय धर्म होता, तो उसमें शान्तिप्रिय लोगों की संख्या भी अधिक ही होनी चाहिए थी, जो नहीं है। अतः शान्ति के लिए कुरान की ऐसी शिक्षाओं का प्रतिबंध लगाना बहुत आवश्यक है जो लोगों को हिंसा का मार्ग दिखाती है। अमेरिका की मध्यस्थता में हुए इस्राइल और मिस्त्र के समझौते में मिस्त्र ने इस प्रकार की आयतों को पाठ्यक्रम से निकालने की शर्त स्वीकार कर ली थी। जब वहाँ ऐसा हो सकता है तो अन्यत्र क्यों नहीं हो सकता? और यदि मुसलमान कुरान का पाठ करते समय निरन्तर काफिरों के प्रति ऐसी द्वेषपूर्ण और हिंसापूर्ण आयतों का पाठ करते जाते है, तो फिर वे शान्तिप्रिय कैसे हो सकेंगें।

भारत के जो सैक्लयुलरिस्ट मदरसों में विज्ञान और कम्प्यूटर आदि की शिक्षा जारी करने में मुसलमानों को शान्तिप्रिय बनाने की आशा दिलाते हैं वे भी परोक्ष रूप से उनको आतंकवादी बनने में सहायता ही करते हैं, क्योंकि आज भी दुनियाँ में विज्ञान पढ़े मुस्लिमों की कोई कमी नहीं है। परन्तु फिर भी उनमें से अधिकतर लोग अपने उस विज्ञान का उपयोग मानव की भलाई में न करके इस्लामी रूढ़िवाद और आतंकवाद को बढ़ावा देने में ही करते दिखाई देते रहे हैं, पुनः जो लोग इस्लामी आतंकवाद में बेकारी को एक कारण मानते हैं उन्हें भी ठीक नहीं कहा जा सकता। जब सिद्धार्थशंकर रे पंजाब के राज्यपाल थे और पंजाब में सिख उग्रवाद चरम सीमा पर था, तो गुरचरण सिंह तोहड़ा ने अपने एक वक्तव्य मे कहा था कि सिख युवक बेरोजगार होने के कारण आतंकवाद में लिप्त होते हैं। उसका उत्तर देते हुए श्री रे ने उचित ही कहा था कि पंजाब में तो केवल पाँच लाख लोग ही बेरोजगार हैं, परन्तु बंगाल में तो 55 लाख बेरोजगार हैं। बेरोजगार, और

गरीब व्यक्ति अपराधों में लिप्त हो सकते हैं, परन्तु कभी भी देशद्रोही नहीं होते और फिर अपराधों में लिप्त हो सकते हैं, परन्तु कभी भी देशद्रोही नहीं होते और फिर अपराधों में लिप्त होने वाले लोगों में बहुत अच्छे खाते-पीते घरों के युवकों की भी कोई कमी नहीं है। अपराध और आतंकवाद/देशद्रोह में रात-दिन का अन्तर है। मुम्बई में आतंकवादी विस्फोटों की शृंखला जारी करने वाला दाऊद इब्राहिम गरीब नहीं था, बहुत धनी था और पुनः उसी के साथी छोटा राजन ने अपराध में लिप्त होते हुए भी जब उसे देशद्रोह का अपराधी पाया, तो उसने न केवल उसका साथ छोड़ दिया, बल्कि उसका जानी-दुश्मन भी बन गया। क्यों? इसलिए कि अपराधी होते हुए भी उसका हिन्दू मन निर्दोष हिन्दुओं की हत्या सहन नहीं कर सका।

एक डॉक्टर ने मुझे एक दिन कहा कि धर्म आदि की बातें करने की अपेक्षा लोगों की सेवा करना अधिक अच्छा है। मैंने उन्हें कहा कि आप आयु भर अपनी चिकित्सा से कितने लोगों को लाभ पहुँचा सकते हैं? केवल कुछ हजार लोगों को। परन्तु ओसामा बिन लादेन ने क्षण भर में हजारों लोगों के प्राण ले लिये। तो लोगों को उचित प्रकार की शिक्षा देना अधिक लाभदायक है या उनकी चिकित्सा आदि करना? अतः चिकित्सा करनी अच्छी है, परन्तु यह समझना कि चिकित्सा के बाद हमें कुछ भी करने की आवश्यकता नहीं है, यह दृष्टिकोण उचित नहीं है। यही स्थिति निर्माण या विकास की भी है। आज के हमारे राजनेता कहते हैं कि हमें देश के विकास की ओर ध्यान देना चाहिए न कि धार्मिक बातों की ओर, परन्तु वे भी इसीलिए गलत हैं कि वर्षों के परिश्रम से बनाये गए बड़े-बड़े भवनों, बाँधों, पुलों, राजमार्गों को आतंकवादी गतिविधियों से एक क्षण-भर में नष्ट किया जा सकता हैं इसलिए विकास करना अच्छा है, परन्तु उससे भी अधिक महत्वपूर्ण काम ऐसे अन्धविश्वासी समूहों को सही रूप से शिक्षित करना है। इसके बिना शान्ति होना और आतंकवाद मिटना सम्भव नहीं है।

चलभाष : *9213135130*

GITA AND RENUNCIATION

-Ashok Vohra

A devotee of Ramakrishna Paramhansa asked him "What is the central teaching of the Bhagavad Gita?" The sage replied, "If you utter the word 'Gita' a few times in rapid succession you begin to say 'taagi' means one who has renounced the world.

Indeed renunciation is at the core of spiritual life.The literal meaning of renunciation is 'desertion', 'abandonment', 'rejection' and 'denunciation'. However, this is not the sense in which it is used in the Gita.

Renunciation, in the Gita, does not mean abandoning the duties of our everyday life and becoming a recluse. Nor does it mean other-worldliness. It does not even mean indifference (Vairagya) to the world and its affairs.

Bal Gangadhar Tilak in his Gitarahasya goes a step further and says that Gita, instead of teaching reenunciation of any kind, preaches 'energism' (Karma yoga). Law of Karma according to him is an energetic principle because "unless some Karma or action has been performed it is not possible for the imperceptible to become perceptible for the imperceptible to become quality-ful".

He goes on to say, "No man is free from action and the action should never be given up," Rather one has to be busy peforming actions that are aimed at Sarvabhutahite Ratah promotion of welfare of all.

Tilak argues: "The Gita was not presented either a a pastime for persons tired out after living a worldly life in pursuit of selfish motives, nor as a preparatory lesson for living such worldly life." Its main purpose is to reveal, "how one should live his worldly life" and to point out our "true duty in worldy life". That is why the Gita discourages monastic, or ascetic life if the spirit of detachment is absent.

Renunciation in the Gita does not refer to renunciation of action but connotes renunciation in action. It means performing one's duties but with a detached mind and without thought of worldly gain-devoting all action to God only. This dedication is the most important component of renunciation.

Renunciation according to Tilak means "whatever a man does must be taken to have been done by him for the purpose of sacrifice". No action is undertaken for personal gain. It is performed for the collective gain of all. The true ideal of Gita is not sacrifice for humanity but service to humanity. One is able to serve humanity if and only if he performs his actions efficiently, skilfully without concern for the outcome or result.

Action must not be renounced because "numerous difficulties arise in the consideration of what should be done and what should not be done" or because there are problems in executing the action. Once we know what is good for loksamgraha or public welfare, we must, with all sincerity and without concern for success or failure, engage ourselves wholeheartedly with conviction in performing the purported action.

Not being attached to the consequences of an action helps one psychologically to perform it most efficiently and "attain the highest" results (Gita 3.19). Non-attachment to action is called Naishkarmya. It is attained, according to Shankaracharya, by the knowledge that we are mere agents, for God is the real doer and acccording to Ramanujacharya, by surrenderring all action to God.

Philosphy Teacher at the University of Delhi

(FORM IV) STATEMENT ABOUT OWNERSHIP AND OTHER PARTICULARS ABOUT "BRAHMARPAN"

Place of Publication and Address	:	New Delhi, C2A/58, Janakpuri, New Delhi-110058.
Periodicity	:	Monthly, A bi-lingual publication (Hindi and English)
Printers' name, citizenship and Address	:	B.D. Ukhul, Indian, C2A/58 Janakpuri, New Delhi-110058.
Publishers' name, citizenship and Address	:	B.D. Ukhul, Indian, C2A/58 Janakpuri, New Delhi-1100058.
Editor's name, citizenship and Address	:	Dr. Bharat Bhushan Vidyalankar, Indian, C2A/90, Janakpuri, New Delhi-110058.
Name and Address of Owner	:	M/s. Brahmasha India Vedic Research Foundation, C2A/58, Janakpuri, New Delhi-110058.
Printing Press	:	Friends Printofast , 6, A5B/A5C Market, Janakpuri, New Delhi-110058.
DCP License No.	:	F2(B-39) Press/2007

I, B.D.Ukhul, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

31.03.2018 Sd/- B.D.Ukhul

Date of Pubn. : 31.3.2018 Posted at - NIE - H.O. Postal Date : 2-3 Apr. 2018
RNI Reg. No. DELBIL/2007/22062 Postal Regd. No. DL(W) 10/2143/2017-2019

यस्येमे हिमवन्तो महित्वा यस्य समुद्रं सरया सहाहुः।
यस्येमाः प्रदिशो यस्य बाहू कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

।।यजु०–2512।।

ऋषिः प्रजापतिः, देवता–ईश्वरः, छन्दः–स्वराष्ट्पक्तिः

हम ऐसे परमेश्वर की स्तुति करते हैं, जिसके कारण हिम से ढके पर्वत खड़े हैं। जिसके कारण अथाह जल राशि लिए हुए समुद्र विद्यमान है। इन विस्तृत दिशाओं को देखकर उस परमेश्वर की सर्व विद्यमानता का आभास होता है। सत्य शब्द और सत्य कार्यों द्वारा हम ऐसे परमेश्वर की उपासना करते हैं।

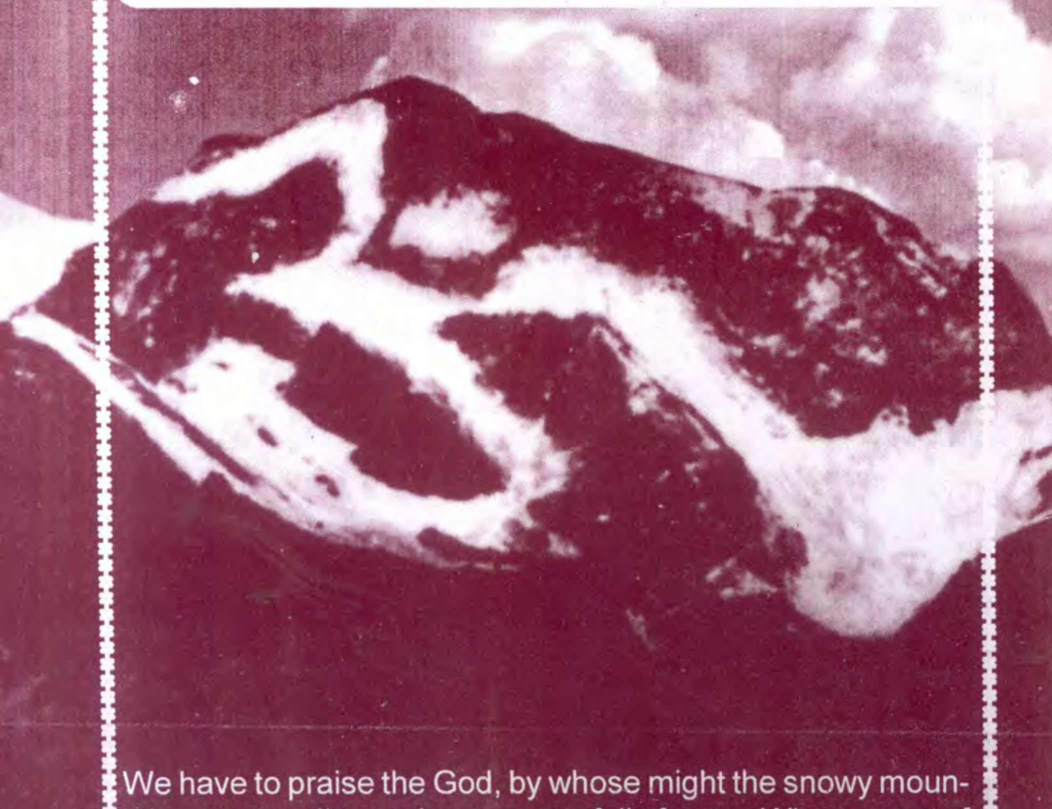

We have to praise the God, by whose might the snowy mountains are standing and oceans are full of water. Whose arms of omnipotence are these heavenly regions. We offer our oblations to such God.

Printed by - Friendsprintofast, New Delhi-58